।।अर्हम् ।।
आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास वयवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.
दुरभाश नं.- 01565-224600
फैक्स नं.- 224900
ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

"अन्तर्मन में मिलता है समाधान - आचार्य महाप्रज्ञ"

श्रीडूँगरगढ़ 5 जनवरी : आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में कल्याण मंदिर स्त्रोत्र पर प्रवचन करते हुए कहा कि दार्-निक जगत में दो :ाब्द बहुत चर्चित रहे हैं - अमूर्त और मूर्त। अमूर्त जो दिखाई नहीं देता और मूर्त जो दिखाई देता है। मनुश्य ने अपनी बुद्धि से अदृ-य को देखने का प्रयास किया। ज्ञान अर्मूत है, काल अमूर्त है, परमात्मा अमूर्त है किन्तु लिपी, घड़ी व मूर्ति बना दी और अमूर्त को मूर्त कर दिया। इसी मनीशा को सामने रखकर आचार्य सिद्धसेन ने भगवान पा-र्व से सम्पर्क साध ा और अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की कि प्रभो ! आप क्या कर रहे हैं, जो श्रद्धालु, भक्त आपको ह्रदय में बिठाता है आप उसी :ारीर को नश्ट कर देते है। ह्रदय तो :ारीर का ही एक अंग होता है। आप इतने दयालु, कृपालु, अहिंसक होकर ऐसा कैसे कर सकते है? आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि इस जिज्ञासा का समाधान आचार्य सिद्धसेन ने पाया क्योंकि समाधान खोजने की पद्धति है चिंतन की गहराई, किसी वि-ेशज्ञ से पराम-र्ा और ध्यान की वि-िश्ठ साधना करने वाले से सम्पर्क। जब आचार्य सिद्धसेन ने अपने अन्तर्मन मे झांका तो समाधान मिल गया और भगवान पा-र्व से सम्पर्क हो गया।

आचार्य प्रवर ने कल्याण मंदिर के प्रस्तुत :लोक को द-र्ान के गूढ़ रहस्यों को समझने वाला बताते हुए कहा कि अनादिकाल से आत्मा और :ारीर मे संघर्श चल रहा है। इन दोनों के संघर्श को खत्म करने के लिए भगवान पा-र्व मध्यस्थ बने और न्याय संगत निर्णय दिया। पा-र्व ने आत्मा का स्थान उर्ध्वलोक और :ारीर का स्थान इस धरती पर बताते हुए दोनों को अलग होकर अपने स्थान पर जाने का रास्ता दिखाया और संघर्श खत्म हो गया। जब आत्मा अपनी मूल अवस्था में विद्यमान हो जाती है, अपनी ज्ञानमय, चैतन्यमय अवस्था को प्राप्त कर लेती है तो :ारीर का अस्तित्व खत्म हो जाता है। आचार्य प्रवर ने :ारीर को आत्मा की मूल अवस्था की प्राप्ति में आवरण पैदा करने वाला बताया।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवचन मे गीता और उतराध्ययन की तुलना करते हुए कहा - गीता में श्री कृश्ण ने कहा आत्मा का स्वभाव वीतरागता है। राग-द्वेश का भाव हमारा विभाव है। जैन साधु के लिए प्रतिदिन दो बार प्रतिक्रमण का विधान है। प्रतिक्रमण का अर्थ है अपने स्थान में, अपने स्वभाव मे लौट आना। साधना के पथ पर व्यक्ति को स्वयं चलना होता है। गुरु मार्ग दिखा सकते है। उतराध्यन मे अध्यात्म का अर्थ बताया गया सारे कर्मो के क्षय से जो स्थिति उत्पन्न होती है वह अध्यात्म है। अनन्त ज्ञान अनन्त द-र्ान, अनन्त आनन्द, अनन्त :ाक्ति यह आत्मा का स्वभाव है कर्मो के क्षय से आत्मा अपने स्वभाव मे रहती है।

युवाचार्य प्रवर ने जन-समुदाय को आत्म रमण करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि। श्रवण करना अच्छा है किन्तु जीवन में उतारना ज्यादा श्रेयस्कर है। उतराध्ययन में अध्यात्म को पुश्ट करने के अनेक सूत्र मिलते है। दसवें अध्याय में कहा गया - समयं गोयम मा पमाइये-क्षण भर भी प्रमाद मत करो।

क्रम-ाः.....2

अप्रमतता का जीवन जीये। बतीसवें अध्याय में कहा गया-साधक साधना करते-करते वीतराग बन

जाता है।

प्रारंभिक प्रवचन में मुनि दिने-ाकुमार जी ने कहा साधना का लक्ष्य मोक्ष है स्वर्ग नहीं । सर्वेन्द्रिय संयम के द्वारा आत्मा की रक्षा करें।